International Journal of Applied Research 2017; 3(9): 183-186

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(9): 183-186
www.allresearchjournal.com
Received: 28-07-2017
Accepted: 29-08-2017

डॉ. प्रमिला सिंह
प्राचार्य, एम.एल. चौरसिया शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. प्रमिला सिंह
प्राचार्य, एम.एल. चौरसिया शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में संहसंबंध का अध्ययन

डॉ. प्रमिला सिंह

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि अध्ययन को जानने का छोटा सा शैक्षिक प्रयास किया गया है। शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए सहसम्बन्ध गुणॉक 0-013545766 की गणना की। यह जानने के लिए कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि पर प्रभाव पड़ता है अथवा नहीं, के लिए क्रान्तिक मान ज्ञात किया जो 0.41 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 से अधिक एवं 2.58 से कम पाया गया।

शब्द कुंजी : रीवा जिला, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी, बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि व सहसंबंध।

1. प्रस्तावना
शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो बालक के अन्दर बीज रूप में विद्यमान शक्तियों का न केवल प्रस्फुटन करती है वरन् उनका परिमार्जन व संवर्द्धन भी करती है। यही विचार पेस्टालॉजी ने भी व्यक्त किया है कि–शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरस और प्रगतिशील विकास है।

छात्रों की बुद्धि द्वारा प्राप्त शैक्षिक उपलब्धि स्कूल या कॉलेज के स्तर को व्यक्त करती है इसके अलावा यह कक्षा में छात्रों के स्तर को भी निर्धारित करती है। बुद्धि द्वारा प्राप्त शैक्षिक उपलब्धि कई चरों पर निर्भर करती है–जैसे लिंग, जाति, स्थानीय भिन्नता, स्कूलों के प्रकार, अभिभावकों की शैक्षिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि, पर्यावरण में भिन्नता और लिंग का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव प्रमुख रूप से दृष्टिगत होता है। विद्यार्थियों की उपलब्धि या उनके ज्ञान की परीक्षा प्राचीन काल से ही किसी न किसी रूप में होती रही है प्राचीन काल में जब गुरू के पास लोग ज्ञानार्जन के उद्देश्य से जाते थे, तो पहले उनके ज्ञान, जिज्ञासा, भाव, एवं निष्पत्ति की परीक्षा ली जाती थी। इसी प्रकार तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला में जो विद्यार्थी प्रवेश पाना चाहते थे, उन्हें पहले द्वार–पंण्डितों के प्रश्नों का उत्तर देना पड़ता था। इस प्रकार उनकी निष्पत्ति परीक्षा ली जाती थी।

जब से शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तिगत भिन्नता के विचार को महत्व मिला है तब से यह बात आवश्यक रूप से समझी जाती है कि छात्रों की व्यक्तिगत विशेषताओं, उनके द्वारा अर्जित ज्ञान बुद्धि आदि के आधार पर शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिये। निष्पत्ति परीक्षा का निर्माण बालक की व्यक्तिगत विशेषताओं तथा उनके ज्ञान बुद्धि के मापन की समस्या के समाधान के लिये किया गया।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में व्यक्ति के सब प्रकार के अनुकूलन पर बल दिया जाता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल यही नहीं है कि उसे ज्ञान प्राप्त हो अपितु यह भी है कि उसका समुचित शारीरिक, संवेगात्मक, मानसिक तथा सामाजिक अनुकूलन हो।

उन्नीसवीं शताब्दी की शुरूआत से ही शिक्षा में निष्पत्ति परीक्षा पर बल दिया जाने लगा है। आज के युग में तो शिक्षा के सभी स्तरों में इस प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग हो रहा है। जैसे–जैसे शिक्षाशास्त्रियों ने यह अनुभव किया कि मौखिक परीक्षाओं का प्रचलन अब सम्भव नहीं है। वैसे–वैसे इस प्रकार के परीक्षणों का विकास एवं प्रयोग होना प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम् 1840 ई0 में शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष श्री होरक मन ने लिखित परीक्षाओं पर जोर दिया। इसी के परिणाम स्वरूप बोस्टन में लिखित परीक्षाओं के प्रयोग का श्री गणेश हुआ। अमेरिका के न्यूयार्क स्टेट रेजेन्ट ने सन् 1865 में लिखित परीक्षाओं पर जोर दिया। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंग्लैण्ड व अमेरिका में व्यापक रूप

से लिखित परीक्षाओं का प्रचलन शुरू हुआ। इसी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सर्वप्रथम फिशर महोदय ने वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का सूत्रपात किया।

ऐतिहासिक रूप से इस परीक्षण का काफी महत्व है। सन् 1900 में इस बात की भी आवश्यकता थी कि कॉलेज एवं विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के लिये किसी कसौटी का होना अनिवार्य है; अतः इस विचार ने इन परीक्षणों को अनिवार्य बना दिया।

थार्नडाइक[1] ने इस दिषा में अपने छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए लिखा है ''अगर वस्तु का अस्तित्व है तो वह कुछ मात्रा में अवश्य है और यदि कोई भी वस्तु थोड़ी सी भी मात्रा में अपना अस्तित्व रखती है, तो वह मापी जा सकती है।''

थार्नडाइक का यह कथन न केवल परीक्षण के क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध हुआ बल्कि मापन की आवश्यकता का वास्तविक श्री गणेश हुआ। प्रथम मानकीकृत परीक्षण का निर्माण सन् 1908 में थार्नडाइक के शिष्य निमस्टोन ने किया। सन् 1909 में थार्नडाइक ने हस्तलेख मापनी का प्रकाशन बालकों के लिये करवाया। सन् 1920 तक विभिन्न स्कूल विषयों पर अनेक मानकीकृत परीक्षणों का निर्माण हुआ।

शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि परीक्षणों से तात्पर्य उन परीक्षणों से है, जो छात्रों के ज्ञान, बोध, कौशल आदि का मापन करते हैं। विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों का अधिगम करने में छात्रों ने कहाँ तक सफलता प्राप्त की है? इसका मापन करने के लिए उन परीक्षणों का ही प्रयोग किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि किसी निश्चित समयावधि में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के द्वारा किसी एक या अनेक विषयों में छात्र के ज्ञान व समझ में हुए परिवर्तन का मापन करने वाले उपकरणों को उपलब्धि परीक्षण कहते हैं। उपलब्धि प्रायः शिक्षा के उद्देश्यों पर आधारित होते हैं तथा इनसे उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त होती है।

शैक्षिक उपलब्धि के अपने उद्देश्य होते हैं जिसके लिए इसका प्रयोग किया जाता है जैसे–शैक्षिक स्तर को बनाये रखना, छात्रों को अध्ययन के लिए प्रेरित करना, अध्यापन कार्य में सुधार लाना, छात्रों को शैक्षिक मार्गदर्शन व परामर्श देना, प्रवेश के लिए छात्रों का चयन करना, छात्रों के वर्गीकरण व प्रोन्नति में सहायता करना, अध्यापकों का मूल्यांकन करना, शैक्षिक संस्थानों के स्तर का निर्धारण करना आदि।

2. शब्दों का स्पष्टीकरण

जिला–रीवा : भारत का हृदय स्थल कहे जाने वाले राज्य मध्य प्रदेश में रीवा जिला मध्य प्रदेश के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित $24^0 18'30''$ से $25^0 11'15''$ उत्तरी अक्षांश के मध्य एवं $81^0 13'15''$ से $82^0 18'45''$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। रीवा जिले का नाम नर्मदा नदी के नाम रेवा पर आधारित है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 62.87 वर्ग किलोमीटर है। उत्तर से दक्षिण की चौड़ाई 96 किमी0 व लम्बाई पूर्व से पश्चिम 125 किमी0 है। प्रंस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री ने जनपद रीवा को शोध अध्ययन हेतु लिया है।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय : उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से तात्पर्य जहॉ सामान्य रूप से 17 से 18 वर्ष के मध्य के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं। इसके अन्तर्गत 11 से 12 तक की शिक्षा आती है। मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल द्वारा इसी शिक्षा व्यवस्था में परीक्षाएं संचालित की जाती है।

विद्यार्थी : प्रस्तुत शोध कार्य में विद्यार्थियों से तात्पर्य कक्षा–11 व कक्षा–12 के विद्यार्थियों से जो कि जनपद रीवा के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययन कर रहें है।

शहरी क्षेत्र : प्रस्तुत शोध कार्य में शहरी क्षेत्रों से तात्पर्य ऐसे स्थानों से है जहॉ विद्यार्थियों को अध्ययन ग्रहण करने हेतु सभी संसाधन–यातायात, बिजली, पानी, अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं, आदि उपलब्ध पाये जाते है।

ग्रामीण क्षेत्र : प्रस्तुत शोध कार्य में ग्रामीण क्षेत्रों से तात्पर्य ऐसे स्थानों से है जहॉ विद्यार्थियों को अध्ययन ग्रहण करने हेतु संसाधनों एवं मूलभूत आवश्यकताओं की कमी रहती है।

बुद्धि : बुद्धि व्यक्ति की तत्परता, तात्कालिकता, समायोजन तथा समस्या समाधान की क्षमताओं के सन्दर्भ में प्रयोग होता रहा है सभी व्यक्ति समान रूप से योग्य नही होतें। मानसिक योग्यता ही उनके असमान होने का प्रमुख कारण है।

शैक्षिक उपलब्धि : शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, इस प्रक्रिया के अन्तर्गत बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावशाली बनाना इसका प्रमुख लक्ष्य है। साधारणतः शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ ज्ञान प्राप्त करना एवं कौशल का विकास करना है। इसका आंकलन एक शैक्षिक वर्ष में परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर, शिक्षकों द्वारा करायी गयी शैक्षिक क्रियाओं के आधार पर या दोनों माध्यमों से किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि का महत्व प्रत्येक शिक्षण कार्य में अत्यन्त आवश्यक है इससे विद्यार्थी की बौद्धिक स्तर के उन्नयन का पता चलता है।

3. शोध की आवश्यकता एवं महत्व –

आज के छात्र एवं छात्रायें ही देश के भावी कर्णधार हैं और इसके निर्माण में शिक्षा की भूमिका अत्याधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा के बिना कोई भी छात्र व छात्रा समाज में अपना स्थान नहीं बना सकती है। कहा भी जाता है कि बालक समाज के दर्पण के रूप में प्रतिबिम्बित होते है, जो अपनी कार्यकुशलता व व्यक्तित्व से समाज को प्रतिबिम्बित करते हैं।

सामान्यतः देखा जाय तो जिन बालकों की बुद्धि–लब्धि उच्च होती है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती है। देखना यह है, कि क्या शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की बुद्धि में कोई अंतर पाया जाता है? यदि है, तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि क्यों और कैसे प्रभावित होती है। अतः वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है, कि बालकों की बुद्धि–लब्धि का पता लगाया जाय व देखा जाय कि कहाँ तक बुद्धि–लब्धि से शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो रही हैं? जिससे इस दिशा में ठोस प्रयास किया जा सकें, ताकि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकें। प्रस्तुत शोधकार्य द्वारा शोधार्थिनी यह पता लगाना चाहती है, कि बुद्धि द्वारा शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकें।

4. उद्देश्य

कोई ज्ञान या कोई अन्वेषण उद्देंश्य विहीन नहीं होता है। अतः इस शोध के भी कतिपय उद्देश्य हैं। उद्देश्य के महत्व को बताते हुए जॉन डीवी महोदय[1] ने कहा है–''किसी शैक्षिक अनुसंधान परियोजना पर तब तक कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए जब तक उस अध्ययन के परिणाम किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति एवं प्रक्रिया को प्रभावकारी ढंग से श्रेष्ठतम बनाने की संभावना प्रस्तुत नहीं कर देते।''

अतः शोध कार्य के निम्नांकित उद्देश्य हैं–

1- शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि–लब्धि में अंतर का अध्ययन।
2- शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का अध्ययन।

5. परिकल्पनाएँ

शोध कार्य में परिकल्पना प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है, जिससे समस्या समाधान को उचित दिशा मिलती है। विज्ञान में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है।

परिकल्पना को परिभाषित करते हुए **लुण्डबर्ग**[2] के अनुसार ''परिकल्पना एक सम्भावित सामान्यीकरण होता है जिसकी सत्यता की जाँच अभी बाकी रहती है। अपनी अति प्रारम्भिक अवस्था में परिकल्पना एक आत्म प्रकाशन, अनुमान, कल्पनात्मक विचार, अन्तर्दृष्टि कुछ भी हो सकती है, जो अनुसंधान कार्य का आधार बन जाता है।''

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

6. शोध अध्ययन का परिसीमांकन :–

1. यह शोध अध्ययन मध्य प्रदेश राज्य के जिला रीवा के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य रीवा जिले के 9 विकासखण्डों में से प्रत्येक विकास खण्ड से 5 शहरी व 5 ग्रामीण शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को यादृच्छिकीय चयन द्वारा किया गया है।
3. न्यादर्श का चुनाव माध्यमिक स्तर के कक्षा–11 के छात्र एवं छात्राओं को ही चयनित किया गया है।
4. शोध अध्ययन में शहरी छात्र 225 एवं शहरी छात्राएं 225 व ग्रामीण छात्र 225 एवं ग्रामीण छात्राएं 225 इस प्रकार कुल 900 छात्र एवं छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।

7. शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है–

7.1 प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method)

शोध क्षेत्र रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यार्थियों का नियंत्रित परिस्थितियों में जलोटा के सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण द्वारा प्रशासन किया गया है।

7.2 सर्वेक्षणात्मक विधि (Survey Method)

शोध क्षेत्र रीवा जिले के सभी विकासखण्डों से संबंधित न्यादर्श के रूप में चयनित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

7.3 साक्षात्कार अनुसूची विधि (Interview Shedule Method)

शोध क्षेत्र रीवा जिले के शहरी एवं ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यार्थियों के अभिभावकों से शोध विषय से संबंधित कार्यक्षेत्र के विषय में प्रश्नों के माध्यम से साक्षात्कार किया गया है।

7.4 प्रश्नावली विधि (Questionnaire Method)

शोध क्षेत्र रीवा जिले के शहरी एवं ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों से शोध विषय से संबंधित कार्य क्षेत्र के विषय में प्रश्नों के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है।

8. चर

प्रस्तुत शोधकार्य में निम्न चरों का प्रयोग किया गया है।

स्वतंत्र चर – शहरी विद्यार्थी एवं ग्रामीण विद्यार्थी
परतंत्र चर – बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि
नियंत्रित चर – कक्षा 11
– शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

9. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने अपने न्यादर्श के वांछित आँकड़ों के चयन हेतु प्रश्नावली उपकरण को प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने निम्न उपकरणों का प्रयोग किया है–

1. सामान्य मानसिक योग्यता–डॉ0 एस0 जलोटा
2. शैक्षिक उपलब्धि हेतु वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांक

10. न्यादर्श

न्यादर्श का वितरण

विद्यार्थी	छात्र	छात्राएं	शिक्षक	अभिभावक
शहरी	225	225	45	45
ग्रामीण	225	225	45	45
कुल	450	450	90	90

11. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा (2005)[2], पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. (2013)[3], गुप्ता, एस.पी. (1997)[4], सिंह अरूण कुमार (2001)[5] एवं त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदन (2007)[6] ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

12. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना – 1 ''शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।"

सारणी 1 : शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध के सार्थकता की जाँच

क्रम सं0	क्षेत्र	छ	सहसम्बन्ध गुणांक	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थी (छात्र एवं छात्राएं)	450	0.013545766	0.41	N.S.
02	ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्याथी (छात्र एवं छात्राएं)	450			

N.S. असार्थक

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए सहसम्बन्ध गुणॉक 0.013545766 की गणना की। यह जानने के लिए कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि पर प्रभाव पड़ता है अथवा नहीं, के लिए क्रान्तिक मान ज्ञात किया जो 0.41 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 से अधिक एवं 2.58 से कम पाया गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है।

अतः परिकल्पना संख्या–01 ''शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है –स्वीकृत की जाती है।

13. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के द्वारा शोध कार्य में प्रयुक्त दो चरों के परिणामों की तुलना परिकल्पनायें बनाकर की गयी है और जो परिणाम आये हैं उनसे ज्ञात हुआ कि छात्र एवं छात्राओं की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई विशेष अन्तर नही है और जो कुछ भी अन्तर देखने में आया है उसके बारे में कहा जा सकता है कि वह अन्तर भाषा के माध्यम के कारण नहीं बल्कि रीवा जनपद की सांस्कृतिक, सामाजिक, परिवारिक पृष्ठभूमि एवं आदिवासी बहुल क्षेत्र व शहरीकारण के बीच रहन–सहन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति व जागरूकता में अन्तर का परिणाम है।

14. संदर्भ

1. पाठक पी0डी0, शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा–2, संस्करण–2005, पृष्ठ–338।
2. मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा : विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, लायल बुक डिपो, 2005।
3. पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. : अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 2013।
4. गुप्ता, एस.पी. : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1997।
5. सिंह अरूण कुमार :*''मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ''* चतुर्थ संस्करण, मोतीलाल नगर बनारसीदास दिल्ली, 2001।
6. त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदन : शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान का शब्दकोश, खण्ड–5 बाल विकास, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2007।